Sanskrit, B. A. Part 3,
Paper 5,,Date 20.07.20,
Dr. Savitri Singh, Associate
Professor, Deptt. of
Sanskrit, R. M. C. Sasaram

आचार्य मम्मट के अनुसार 'काव्य का स्वरूप'

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि ॥'

(ऐसे शब्द और अर्थ काव्य हैं, जो दोषों से रहित, गुणों से युक्त और कहीं अलंकार रहित भी हैं।)

काव्य का स्वरूप बतलाते हुए आचार्य मम्मट ने 'उस शब्दार्थ युगल को काव्य कहा है जो दोष-रहित तथा गुणसहित हो और जो अलंकारों से अलंकृत हो- किन्तु यदि कहीं स्पष्ट अलंकार न भी हो तो भी काव्यत्व की क्षति नहीं होती है। इस प्रकार काव्य के लक्षण में चार अंश हैं—

(i) शब्दार्थौ तत् (काव्यम्)
(ii) अदोषौ
(iii) सगुणौ
(iv) अनलंकृती पुनः क्वापि।

(i) शब्दार्थौ तत् —

शब्द और अर्थ दोनों मिलकर काव्य हैं। इस कथन में शब्द और अर्थ के विशिष्ट साहित्य की ओर संकेत है। इसके द्वारा सामान्य वाङ्मय इतिहासादि से साहित्य या काव्य का पृथक् किया जाता रहा है। शब्द और अर्थ काव्य का शरीर है। शब्दार्थ युगल काव्य की पहली शर्त है। काव्य शब्दार्थ युगल में ही निवास करता है।

(ii) अदोषौ - यह शब्दार्थ युगल का विशेषण है दोषरहित शब्दार्थ युगल ही काव्य पद का अधिकारी है किंतु संसार में सर्वथा दोषरहित तो कोई वस्तु है नहीं। इस लिए भाव यह है कि काव्यत्व के विघातक जो च्युतसंस्कृति आदि दोष हैं वे नहीं होने चाहिए। आचार्य मम्मट के विचार में दोष रसादि के अपकर्षक या विघातक होते हैं गुणों का अभाव मात्र हो दोष नहीं है इसीलिए 'सगुणौ' से पृथक् 'अदोषौ' पद दिया गया।

(iii) सगुणौ - सगुणता भी शब्दार्थयुगल का विशेषण है माधुर्य, ओज और प्रसाद नामक गुणों से विशिष्ट दोषरहित शब्दार्थयुगल काव्य है, गुणरहित शब्दार्थयुगल काव्य नहीं। यद्यपि मम्मट के मत में गुण रसनिष्ठ हैं, तथापि परम्परा से ये शब्द और अर्थ के भी धर्म कहे जाते हैं, क्योंकि रस की अभिव्यञ्जना शब्द और अर्थ द्वारा ही होती है

(iv) अनलङ्कृती पुनः क्वापि -

अनलङ्कृती शब्द में नञ् ईषदर्थक (अल्पतावोधक) है, इस अल्पता का अर्थ है-अस्फुटता अतः जिन्हें काव्य कहा जाता है, ऐसे शब्दार्थ प्रायः अलंकार-युक्त होते हैं, किन्तु यदि कहीं पर स्फुट अलंकार की प्रतीति न होती है तो भी शब्दार्थसाहित्य

में अदोषता एवं सगुणता के रहने के कारण काव्यत्व स्वीकार करना पड़ता है।

———— X ————